Jyotish/ ज्योतिष

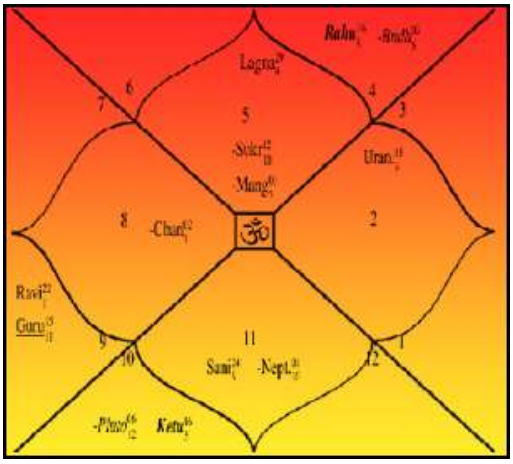

आज प्रत्येक व्यक्ति भय में जीवन बिता रहा है, भय का अर्थ यहां पर इस बात से है की आगे क्या होने वाला है यह हमे मालूम (पता) नही है भय के अनेक रूप होते हैं, जैसे स्वास्थ्य को लेकर भय, धन–सम्पति को लेकर भय, संतान से संबंधित भय आदि। यहाँ पर हम ज्योतिष शास्त्र की मदद से आपके कर्मो की गहराई में जाकर भय रूपी भूत को भगाकर आपके अन्दर आत्मविश्वास की एक नई ऊर्जा को जगाना, जीवन के प्रति आपको आस्थावान बनाने का काम करते हैं।

यदि आज मुझे अपना आगे आने वाला भविष्य पता चल जाए कि अगले 2 या 4 वर्ष मेरे लिए किस प्रकार के होंगे तो मेरा भय या डर उसी समय चला जाएगा या कम से कम आगे आने वाली समस्या का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार रहूँगा और यदि संभव हो सका तो उस समस्या का उपचार करके उसके नकारात्मक प्रभाव को कम या समाप्त करके उसका सकारात्मक प्रभाव बढ़ा भी सकता हूँ। यहाँ ज्योतिष शास्त्र आपके आगे आने वाले समय के बारे मे बताकर आपको सचेत करता है। ज्योतिष शास्त्र की आधारशिला जातक द्वारा किये गये कर्म हैं। कर्म फलों को भोगने के लिए उसे अनेकों जन्म लेने पड़ते हैं और अंत मे जातक मोक्ष को प्राप्त होता है।

वेदों के छः अंग हैं, जिसमें छठा अंग ज्योतिष है, (1) शिक्षा, (2) कल्प, (3) निरूक्त, (4) व्याकरण, (5) छन्द, (6) ज्योतिष। ज्योतिष शास्त्र वेदों का अंग है, इसको ही वेदों का नेत्र कहा गया है। जिस प्रकार शरीर के सभी अंगों में नेत्र श्रेष्ठ है उसी प्रकार वेदों में ज्योतिष श्रेष्ठ है। **यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा। तद्वद्वेदाडग शास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्।।** अर्थात् जैसे मोर के सिर पर शिखा और सर्प के सिर पर मणि शोभायमान रहती है उसी प्रकार से वेदांग शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र भी शोभायमान है।

शिक्षा– वेदों या वेद मंत्रों पढ़ने के स्थान पर यदि गाया जाएं, तो अधिक आनन्द प्राप्त होता है, जिसके लिए वेदों का सही और सटीक उच्चारण होना चाहिए जो बिना शिक्षा के संभव नही है, क्योंकि सही उच्चारण ही वेदों की नासिका (नाक) है।

कल्प– कल्प को वेदों का हाथ बताया गया है, क्योंकि यज्ञ और कर्मकाण्ड करने की अनेकों विधियाँ हैं जिनको हाथों से किया जाता है जिसमें अनेकों बारिकियाँ होती हैं।

व्याकरण– अनेकों जटिल वेद मंत्रों को साधरण सी लौकिक भाषा या शब्दों में व्यक्त करना जो बिना व्याकरण के संभव नही है इसलिए व्याकरण को वेदों का मुख कहा है।

निरूक्त– वेदों को ज्ञान का भण्डार कहा गया है, ज्ञान की प्राप्त कानों के द्वारा होती है, इसी कारण निरूक्त को वेदों का कान (कर्ण) कहा गया है।

छन्द– छन्द को वेदों का पैर बताया गया है, जो विभिन्न प्रकार के मंत्रों, श्लोको, छन्दों आदि को उनकी जाति के आधार पर उनका वर्गीकरण करता है।

ज्योतिष– वो शास्त्र जो ग्रहों और नक्षत्रों की अनेकों प्रकार से गणना आदि करके मानव जीवन पर उसके पूर्व जन्म के कर्म फलों को दिखाता है, इसीलिए ज्योतिष शास्त्र को वेदों का नेत्र (आँख) कहा गया है।

संपूर्ण ज्योतिष शास्त्र को तीन भागों में बाँट गया है (1) सिद्धांत ज्योतिष (2) संहिता ज्योतिष (3) होरा शास्त्र (ताजिक), (प्रश्न शास्त्र), (शकुन शास्त्र), आदि।

सिद्धांत– इसमें सभी ग्रहों की चाल, वक्री होना, मार्गी होना, अस्त होना, उदय होना, सभी प्रकार से समय की गणना करना, 27 नक्षत्रों की चाल, 12 लग्नों का समय निश्चित करना, ग्रहण आदि का अध्ययन जिस शास्त्र के द्वारा किया जाता है उसे सिद्धांत ज्योतिष कहा जाता है।

संहिता– ग्रहों नक्षत्रों के आधार पर सामूहिक घटनाओं का पूर्वानुमान लगाना जैसे– भूकम्प, महामारी, वर्षा आदि की गणना संहिता शास्त्र के द्वारा की जाती है।

होरा शास्त्र– ग्रहों, नक्षत्रों, दशाओं, ग्रहों का गोचर, योगों आदि का अध्ययन करके किसी जातक के जीवन में होने वाली अच्छी या बुरी घटनाओं का पूर्वानुमान लगाना जिस शास्त्र के द्वारा किया जाता है उसे होरा शास्त्र कहते हैं। समाज में "होरा शास्त्र" फलित ज्योतिष के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ विद्वान कहते हैं होरा शब्द अहोरात्रि में से आदि से अ और अंत से त्रि हटाने से हुई है। होरा शास्त्र का अर्थ है पूर्व जन्म में किये हुए अच्छे–बुरे कर्मो के फलों की प्राप्ति इस जन्म में अभिव्यक्ति करना है।

शकुन शास्त्र–अपने आसपास अचानक प्रकृतिक रूप से किसी घटना के घटने पर उस घटना के आधार पर पूर्वानुमान लगाना शकुन शास्त्र कहलाता है।

प्रश्न शास्त्र– भारतीय ज्योतिष शास्त्र के प्रश्न कुण्डली एक अचूक बाण का काम करती है, यदि आपके पास जन्म पत्रिका नही है और आप किसी विशेष प्रश्न का उत्तर जानना चाहते हैं तो प्रश्न शास्त्र के अनुसार आपको आपके प्रश्न का उत्तर दिया जायेगा।

ताजिक शास्त्र– अधिकतर लोग इस शास्त्र को वर्षफल के नाम से जानते हैं आपकी जन्म पत्रिका में स्थित सूर्य की गणना के आधार पर एक वर्ष कुण्डली या वर्ष फल लिखा जाता है जिसमे आपके साथ घटने वाली वर्ष भर की सभी घटनाओं का वर्णन एक समय अवधि के अन्तर्गत दिया जाता है।

ज्योतिष के माध्यम से हम इस जीवन में सुख–समृद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र एक प्राचीन शास्त्र है। ज्योतिष शास्त्र में सभी नौ ग्रहों, बारहा राशियाँ, सत्ताईस नक्षत्रों, अनेकों प्रकार की कुण्डलियों, वर्गो, योगों, ग्रहों की अवस्थाओं आदि के कारण यह एक जटिल और गूढ़ विज्ञान बन जाता है। इसलिए फलादेश करते समय अनेकों सिद्धांतों एवं नियमों का पालन पूरी सावधानी के साथ होना चाहिएं नही तो "नीम हकीम खतरा–ए–जान"।

किसी भी जन्म पत्रिका का फलित बताने से पहले ग्रहों, राशियों, वर्गो आदि की जानकारी होना परम आवश्यक है, जैसे ग्रहों की गति, ग्रहों के गुणधर्म, ग्रहों के लिंग, ग्रहों की नैसर्गिक शुभता/अशुभता, ग्रहों की दशाएं, ग्रहों का उदय/अस्त होना, ग्रहों का उच्च अंश/ नीच अंश, ग्रहों के कारक, ग्रहों की विभिन्न प्रकार की अवस्थाएं, ग्रहों का स्वग्रही/मूलत्रिकोण / शत्रु राशि का विचार, योग कारक ग्रह, ग्रहों की विभिन्न प्रकार की दृष्टियाँ, ग्रहों का वक्री या मार्गी होना, ग्रहों द्वारा बनाए गये विभिन्न प्रकार के योग, ग्रहों के विभिन्न प्रकार के बल, राशियों की प्रकृति, राशियों के तत्व, राशियों के गुणधर्म, राशियों के लिंग भेद, भावों के कारक तत्व और निम्न वर्ग कुण्डलियां

(1) सूर्य लग्न (आत्म बल विचार)

(2) चन्द्र लग्न (मनोबल विचार)

(3)लग्न कुण्डली (शरीर की बनावट आदि)

(4) होरा वर्ग (समृद्धि/दरिद्रता)

(5) द्रेष्काण (भाई–बहन)

(6) चतुर्थांश (भाग्य, चल/अचल सम्पत्ति)

(7) पंचमांश (ज्ञान विचार)

(8) षष्ठांश (शत्रु विचार)

(9) सप्तमांश (सन्तान, पोते/पोती आदि)

(10) अष्टमांश (आयु विचार)

(11) नवमांश (ग्रहों का बल, वैवाहिक जीवन, साझीदारी)

(12) दशमांश (समृद्धि एवं सम्मान जीवन में उपलब्धि, व्यावसायिक सफलताएं)

(13) एकादशांश (लाभार्जन विचार)

(14) द्वादशांश (जातक के माता–पिता)

(15) षोड्शांश (खुशी, दुख, वाहन सुख)

(16) विंशांश (प्रार्थना, पूजा–पाठ, उपासना)

(17) चतुर्विंशांश (शिक्षा–दिक्षा, ज्ञान आदि)

(18) सप्तविंशांश (शक्ति, कमजोरी)

(19) त्रिंशांश (अरिष्ट)

(20) खवेदांश (जीवन में शुभ/अशुभ घटित होना)

(21) अक्षवेदांश (सर्वा स्थिति विचार)

(22) षष्टयांश (जीवन में अच्छे–बुरे परिणाम)।

उपर्युक्त सभी विषयों का गहराई से अध्ययन करने के बाद ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आप किस कर्म का फल भोग रहे हैं और उस कर्म फल का कौन सा सूचक ग्रह या योग है और उसके लिए प्रायश्चित कर्म या उपचार आदि किस प्रकार करें और किन सावधानियों का ध्यान रखें।